International Journal of Research
Special Issue for UGC Approved Journal-Hindi Papers
Available at https://edupediapublications.org/journals
e-ISSN: 2348-6848
p-ISSN: 2348-795X
Volume 05 Issue 05
March 2018

शतपथ–ब्राह्मण 'विज्ञान भाष्य' के परिप्रेक्ष्य में

राजेश कुमार
शोधार्थी, संस्कृत, पालि एवं प्राकृत विभाग
महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय, रोहतक

वैदिक वाङ्मय ज्ञान का प्राचीनतम स्रोत है। यही कारण है कि इसमें व्याख्या की अपार संभावनायें हैं। वेदों के विविध भाष्य उनके अर्थगत वैशिष्ट्य के प्रतिफलन ही हैं। वैदिक वाङ्मय में भाष्यों की परम्परा अति प्राचीन है। मन्त्रार्थ को अधिक से अधिक स्पष्ट करने की दृष्टि से भाष्यों का उपक्रम किया गया। विविध आचार्यों ने वेदों तथा ब्राह्मण–ग्रन्थों पर अनेक भाष्य किये हैं। ये भाष्य ज्ञान–विज्ञान के विभिन्न आयामों को तो अनावृत करते ही हैं, साथ ही चिन्तन की नवीन दिशा भी प्रदान करते हैं।

शतपथ–ब्राह्मण पर उपलब्ध भाष्यों की विवेचना करने से पूर्व 'भाष्य' शब्द को स्पष्ट करना अत्यन्त आवश्यक है। 'भाष्य' प्रमुख रूप से सूत्रात्मक निर्देशों की शब्दशः सुपरिष्कृत व्याख्या है जिसमें भाष्यकार के व्यक्तिगत विचार सम्मिलित होते हैं –

सूत्रार्थो वर्ण्यते यत्र पदैः सूत्रानुसारिभिः।
स्वपदानि च वर्ण्यन्ते भाष्यं भाष्यविदो विदुः।।[1]

अर्थात् जहाँ सूत्रानुसारी पदों के द्वारा सूत्रों का अर्थ वर्णित किया जाता है तथा जिसमें भाष्यकार के अपने व्यक्तिगत विचार भी सम्मिलित होते हैं उसे 'भाष्य' संज्ञा से अभिहित किया जाता है।

'भाष्य' शब्द के स्पष्टीकरण के लिए इसके व्युत्पत्तिलभ्य अर्थ को जानना भी अत्यन्त आवश्यक है – (भाष्यते विवृततया वर्ण्यते इति।) भाष् + ण्यत्।

International Journal of Research
Special Issue for UGC Approved Journal-Hindi Papers
Available at https://edupediapublications.org/journals
e-ISSN: 2348-6848
p-ISSN: 2348-795X
Volume 05 Issue 05
March 2018

पण्डित मोतीला शास्त्री ने भी शतपथ–ब्राह्मण के प्रथम काण्ड में आत्मनिवेदन के प्रसङ्ग में 'भाष्य' के विषय में अपने विचार को स्पष्ट करते हुये कहा हैं – ''अक्षरार्य ख्ज्लचम ीमतम,

समन्वय को जहाँ टीका कहा जाता है, विशेष सूचनाओं को टिप्पणी माना गया है, वहाँ गन्थानुगत शब्दों की पारिभाषिकी व्याख्या ही भाष्य नाम से व्यवहृत हुयी है।''[2]

शतपथ–ब्राह्मण पर अद्यावधि अधोलिखित पाँच भाष्य प्राप्त होते हैं जिनमें कुछ पूर्ण तथा कुछ अपूर्ण रूप में हैं –

1. हरिस्वामीकृत भाष्य
2. उव्वटकृत भाष्य
3. सायणविरचित भाष्य
4. कवीन्द्राचार्यप्रणीत भाष्य
5. पण्डित मोतीलाल शास्त्रीकृत विज्ञानभाष्य
6. स्वामी समर्पणानन्द सरस्वतीकृत भाष्य (बुद्धदेव विद्यालङ्कार)

पण्डित मोतीलाल शास्त्री

'शतपथ–ब्राह्मण–हिन्दी–विज्ञान–भाष्य' का प्रणयन करने वाले पण्डित मोतीलाल शास्त्री का जन्म राजस्थान के जयपुर नगर में श्रावण शुक्ल तृतीया वि०सं० 1964 को हुआ था। इनकी माता का नाम रुक्मिणी देवी तथा पिता का नाम पं० बालचन्द्र शास्त्री था। इनके बचपन का नाम गोविन्दचन्द्र था जो बाद में मोतीलाल शर्मा (शास्त्री) के रूप में प्रसिद्ध हुआ।

वेद वीथी पथिक शास्त्रीकृत 'विज्ञान भाष्य' भाष्यग्रन्थ रूपी पुष्पगुच्छों में अद्वितीय रत्न स्वरूप है। राजस्थान के जयपुर नगर में जन्मे शास्त्री जी ने पण्डित मधुसूदर ओझा के सान्निध्य में रहकर वेदों का वैज्ञानिक अध्ययन किया था। शास्त्री जी के

International Journal of Research
Special Issue for UGC Approved Journal-Hindi Papers
Available at https://edupediapublications.org/journals
e-ISSN: 2348-6848
p-ISSN: 2348-795X
Volume 05 Issue 05
March 2018

तत्कालीन अध्ययन के परिणामस्वरूप उनके वैदिक–विज्ञान से सम्बन्धित ग्रन्थ अद्यावधि ज्ञान के नूतन कपाटों को खोल रहे हैं। उनका देहावसान 20 सितम्बर 1960 को हुआ।

विज्ञान भाष्य से सम्बन्धित महत्त्वपूर्ण तथ्य

शास्त्री जी के विज्ञानभाष्य से सम्बन्धित आवश्यक सूचनायें निम्नलिखित हैं –

वेद विद्वान् पण्डित मधुसूदन ओझा तथा उनके शिष्य वेदविज्ञ पण्डित मोतीलाल शास्त्री ने ब्राह्मण–ग्रन्थों में प्रतिपादित वेदविज्ञान को यज्ञविज्ञान किंवा 'सृष्टिविज्ञान' के रूप में निबद्ध किया तथा संहिताओं, आरण्यकों तथा उपनिषदों के वचनों के साथ समन्वित कर विज्ञानभाष्य को प्रस्तुत किया।

शतपथ–ब्राह्मण के विज्ञानभाष्य के प्रथम काण्ड में शास्त्री जी ने पारिभाषिक सूचनाओं के द्वारा विज्ञानभाष्य से सम्बन्धित अनेक महत्त्वपूर्ण तथ्यों को स्पष्ट किया है। इसी क्रम में उन्होंने लिखा है कि इस भाष्य का मुख्य उद्देश्य वैदिक–विज्ञान की रहस्यपूर्ण तात्त्विक परिभाषाओं का यथामति स्वरूपविश्लेषणमात्र ही है। यह ठीक है कि वैज्ञानिक परिभाषाओं की आधारशिला कर्मकाण्डानुगता पद्धतियाँ ही हैं। स्वयं ब्राह्मणग्रन्थों ने इसी शैली के आधार पर वैज्ञानिक परिभाषाओं का समन्वय किया है। पहले कर्म की पद्धति बतलाई जाती है पश्चात् तत्कर्मसम्बन्धिनी वैज्ञानिकी परिभाषा बतलाई जाती है।[3]

इस प्रकार शास्त्री जी के इस कथन से स्पष्ट है कि इन वैज्ञानिक परिभाषाओं की नींव ऋषियों ने पुराकाल में ही डाल दी थी, उन्होंने उन वैज्ञानिक तथ्यों की खेज करके वेदविज्ञान को विज्ञानभाष्य के रूप में व्यवस्थित किया है।

1 विज्ञानभाष्य के दृष्टिकोण से 'यज्ञ' का स्वरूप

शास्त्री जी के अनुसार 'यज्ञ' ब्रह्माविज्ञान के आधार पर प्रतिष्ठित प्रकृतिसिद्ध कर्म है जिसका साङ्गोपाङ्ग विवेचन ब्राह्मण–ग्रन्थों में उपलब्ध होता है। ब्राह्मणों में

e-ISSN: 2348-6848
p-ISSN: 2348-795X
Volume 05 Issue 05
March 2018

प्रतिपादित 'यज्ञ' सृष्टिविज्ञान की प्रक्रिया से समन्वित है। निःसन्देह, यज्ञविज्ञानरूपा मौलिक सृष्टि प्रक्रिया को उद्घाटित करने के दृष्टिकोण से ही पण्डित मोतीलाल शास्त्री जी ने शतपथ–ब्राह्मण विज्ञानभाष्य का प्रणयन किया।

यज्ञविज्ञान से अपने अभिप्राय को स्पष्ट करते हुए पण्डित मोतीलाल शास्त्री ने कहा है ''अशन–गमन–शयन–जागरण–दर्शन–श्रवण–वदन आदि मानवीय प्रत्येक कर्म एक–एक स्वतन्त्र 'यज्ञ' है। प्रत्येक यज्ञ का अपना मूल प्रतिष्ठा प्राण है। वही मूलप्राण तद्यज्ञ का विज्ञान है। तत्स्वरूप–विज्ञान ही 'यज्ञविज्ञान' है, जिस विज्ञान के आधार पर ही मानव के आध्यात्मिक यज्ञों की स्वरूप–व्यवस्था हुयी है। उसी मूलयज्ञ से आधिभौतिक यज्ञ व्यवस्थित हैं। यज्ञिया–जीवनपद्धति ही मानव की वास्तविक–जीवनपद्धति है।''[4]

अतः शास्त्री जी ने मानव जीवन में यज्ञ के महत्त्व को स्पष्ट करते हुए बताया है कि मानव का प्रत्येक कर्म यज्ञानुप्राणित है। √यज्–देवपूजासङ्गतिकरणदानेषु से समन्वित यज्ञ कर्म है तदनन्तर उसका समर्पण। यद्यपि इस आध्यात्मिक यज्ञ का मूल आधिभौतिक यज्ञ ही है।

शास्त्री जी के अनुसार 'विज्ञान' शब्द यज्ञविज्ञान में ही निरुढ़ हो गया है। ब्रह्मविज्ञान को ज्ञान से व्यवहृत किया है – 'ज्ञानं तेऽहं सविज्ञानम्' इत्यादि वचन से प्रमाणित है। इस वचन के अनुसार, ''ज्ञानं का अर्थ है – ब्रह्मविज्ञानम् एवं विज्ञानं शब्द का अर्थ है – यज्ञविज्ञानम्।''[5] अर्थात् ब्रह्मविषयक एकत्व से युक्त 'ज्ञान' है तथा यज्ञविषयक अनेकत्व से युक्त 'विज्ञान' है।

2 'विज्ञान' शब्द का शब्दार्थ समन्वय

पण्डित मोतीलाल शास्त्रीकृत विज्ञानभाष्य के साथ प्रयुक्त 'विज्ञान' शब्द अत्यन्त महत्त्वपूर्ण है। शतपथ–ब्राह्मण के भाष्यों में यह अपने वैज्ञानिक विवेचन के कारण ही

उच्च स्थान पर प्रतिष्ठित है। शास्त्री जी ने अपने विज्ञानभाष्य के 'विज्ञान' शब्द से सम्बन्धित अनेक महत्त्वपूर्ण तथ्यों को उद्घाटित किया है जिनसे इस भाष्य का अध्ययन सुगमता पूर्वक किया जा सकता है। भाष्य के साथ संयुक्त 'विज्ञान' शब्द से सम्बन्धित बिन्दु निम्नलिखित हैं –

भाष्य के साथ प्रयुक्त 'विज्ञान' शब्द के विषय में अपना मन्तव्य प्रस्तुत करते हुये शास्त्री जी कहते हैं –

''हमारा 'विज्ञान' शब्द वर्तमान भूतविज्ञान शब्द से सर्वथा ही असंस्पृष्ट है। भारतीय वेदशास्त्रसम्मत विशुद्ध प्राच्य दृष्टिकोण के आधार पर ही हमने सर्वत्र 'विज्ञान' शब्द समन्वित माना है।''[6]

चौबे जी ने भी अपने ग्रन्थ 'वेद विज्ञान–चिन्तन' में विज्ञानभाष्य से सम्बन्धित उक्त तथ्य के विषय में विचार व्यक्त किये हैं –

''पं० ओझा जी तथा शास्त्री जी ने ब्राह्मणगत अर्थवादों में जिस वेद विज्ञान का संकेत किंवा विवेचन पाया, वह भौतिक विज्ञान अर्थात् 'साइन्स' का पर्याय नहीं।''[7]

अर्थात् शास्त्रीकृत विज्ञानभाष्य अणु–परमाणु के विज्ञान से सर्वथा असंस्पृष्ट है अपितु वह तो शुद्ध वैदिक सिद्धान्तों पर आधारित है। शास्त्री जी ने विज्ञान शब्द स्पष्ट करते हुये कहा है – ''इस शब्द के वि–ज्ञानम्–ये दो विभाग स्वतः सिद्ध हैं। 'वि' सुप्रसिद्ध उपसर्ग है जिसके विशेष–विविध एवं विरुद्ध तीनों ही अर्थ हो सकते हैं, जैसे कि 'वि' उपसर्ग से समन्वित 'विकर्म्म' शब्द के विशेषकर्म्म–विविधकर्म्म–विरुद्धकर्म – तीनों अर्थ यथाप्रकरण शास्त्रों में समन्वित हुये हैं। इस दृष्टि से विज्ञानम् शब्द के भी तीनों ही अर्थ सम्भव हैं, जिनके यह लक्षण किये जा सकते हैं –

1. विशेषं ज्ञानं–विज्ञानम्
2. विविधं ज्ञानं–विज्ञानम्

3. विरुद्धं ज्ञानं–विज्ञानम्[8]

प्रस्तुत विज्ञानशब्दार्थ के समन्वय–प्रसङ्ग में सर्वान्त के तीसने विरुद्ध भावात्मक विज्ञानभाव का तो स्वतः एवं निराकरण हो रहा है। ..... शेष रह जाते हैं प्रथम–द्वितीय लक्ष्ण विशेष तथा विविधभावात्मक विज्ञान। ..... 'विशेषं ज्ञानं विज्ञानम्' का 'विविध ज्ञानं विज्ञानम्' इस लक्षण पर ही पर्य्यवसान हो जाता है। ..... 'विशेषभावानुगतं– विशेष –भावाभिन्नं–विविधं ज्ञानमेव विज्ञानम्' यही अर्थ बनता है विज्ञान शब्द का। ..... 'भेदक' नाम से प्रसिद्ध 'विशेष भाव' जिससे अभिन्न है, ऐसा विविध भावात्मक ज्ञान जहाँ 'विज्ञान' कहलाया है, वहाँ इस विविधरूपा से पृथक् एकविध ज्ञान ही ज्ञान माना जायेगा।''[9]

शास्त्री जी के इस ज्ञानविज्ञानात्मक दृष्टिकोण के विषय में श्री चौबे जी ने कहते हैं –

''शास्त्री जी की दृष्टि में एकविषयक ज्ञान ज्ञान है तथा विविधविषयक ज्ञान विज्ञान है – 'विविधं ज्ञानं विज्ञानम्, सृष्टि के विभिन्न पदार्थों में ब्रह्म की सत्ता व्याप्त है, इसलिए उन विविध पदार्थों में ब्रह्मविषयक ज्ञान 'ज्ञान' है और एक ब्रह्म से किस प्रकार विविध तत्त्वों एवं पदार्थों का निर्माण हुआ है, इसका ज्ञान विज्ञान है। इस प्रकार ओझा जी तथा शास्त्री जी के मत में विज्ञान का अर्थ सृष्टिविज्ञान है।''[10]

अस्तु–किसी एक पदार्थ विषयक ज्ञान 'ज्ञान' है तथा जज्जन्य भिन्न–भिन्न पदार्थों का ज्ञान 'विज्ञान' है। इस तथ्य को एक सामान्य दृष्टान्त द्वारा निम्नलिखित रूप से समझा जा सकता है – किसी गृह को देखकर सर्वप्रथम यह ज्ञान उत्पन्न होता है कि 'यह एक गृह है' तदन्तर इस गृह का स्वामी अमुक व्यक्ति है, इसमें गृहस्वामी का परिवार निवास करता है तथाग गृह के स्वरूप इत्यादि के विषय में जो ज्ञान उत्पन्न होता है, वह विज्ञान है।

International Journal of Research
Special Issue for UGC Approved Journal-Hindi Papers
Available at https://edupediapublications.org/journals
e-ISSN: 2348-6848
p-ISSN: 2348-795X
Volume 05 Issue 05
March 2018

शास्त्री जी का यह वैज्ञानिक दृष्टिकोण उनकी कल्पना से प्रसूत नहीं है अपितु विशुद्ध वैदिक सिद्धान्तों पर आधारित है जिसका बीजाङ्कुरण प्रथमतः मन्त्रद्रष्टा ऋषियों द्वारा किया गया है –

''विज्ञानाद्धयेव खल्विमानि भूतानि जायन्ते, विज्ञानेन जातानि जीवन्ति, विज्ञानं प्रयन्त्भिसंविशन्ति, विज्ञानमित्युपास्व।''[11]

3 'विज्ञान' एवं 'ज्ञान' शब्दों में भेद

विज्ञान वह है, जो विशेषभाव से अभिन्न है तथा विविध भावात्मक है –

''विशेषभावानुगतं–विशेषभावाभिन्नं–विविधं ज्ञानमेव विज्ञानम्''[12]

शास्त्री जी ने ज्ञान एवं विज्ञान के मध्य अन्तर को स्पष्ट करते हुये कहा है – विविध भावात्मक ज्ञान 'विज्ञान' है तथा विविधता से पृथक् एकविध ज्ञान ही 'ज्ञान' है।

इस प्रकार शास्त्री जी के अनुसार एकविषयक ज्ञान 'ज्ञान' है तथा विविधविषयक ज्ञान 'विज्ञान'। जगत् के प्रत्येक पदार्थ में ब्रह्म की सत्ता विद्यमान है इसीलिए विविध पदार्थों में ब्रह्मविषयक ज्ञान 'ज्ञान' है तथा ब्रह्म से किस प्रकार सृष्टि के विविध पदार्थों की रचना हुई यह ज्ञान 'विज्ञान' है। अतः कहा जा सकता है कि शास्त्री जी की दृष्टि में विज्ञान शब्द का अर्थ सृष्टिविज्ञान है।

4 श्रुति द्वारा ज्ञान–विज्ञान पदों का समर्थन

पण्डित मोतीलाल शास्त्री जी ने अपने शतपथब्राह्मण विज्ञानभाष्य के प्रथम काण्ड के प्रथम खण्ड में पारिभाषिक सूचनाओं के क्रम में स्पष्ट किया है कि ज्ञान–विज्ञान दोनों ही शब्द श्रुतिप्रदत्त हैं –

ब्रह्मैवेदं सर्वम् – अर्थात् वह ब्रह्म ही सब कुछ है, सब कुछ बन रहा है। यह श्रुति 'ब्रह्म' को उद्देश्य मानकर जहाँ 'इदं सर्वं' रूप विश्व का विधान करती हुयी विज्ञानपक्ष का समर्थन कर रही है, वहाँ 'सर्व खल्विदं ब्रह्म' अर्थात् 'यह सब कुछ

अन्ततोगत्वा ब्रह्म ही है' यह श्रुति 'विश्व' को उद्देश्य मानकर 'ब्रह्म' का विधान करती हुयी ज्ञानपक्ष का समर्थन कर रही है। इसी प्रकार 'प्रजापतिस्त्वेवेदं सर्वं यदिदं किञ्च' प्रजापति ही यह सब कुछ बना है, जो कि तुम देख रहे हो, इत्यादि श्रुति विज्ञानपक्ष का अनुगमन कर रही है, वहाँ 'सर्वमु ह्येवेदं प्रजापतिः' यह सब कुछ अन्ततोगत्वा प्रजापति ही है, इत्यादि श्रुति ज्ञानपक्ष का अनुगमन कर रही है। एवमेव 'सत्यं ज्ञानमनन्तं ब्रह्म' श्रुति स्पष्ट शब्दों में जहाँ 'ज्ञान' स्वरूप को लक्ष्य बना रही है, वहाँ 'नित्यं विज्ञानमानन्दं ब्रह्म' श्रुति विस्पष्ट शब्दों में ब्रह्म के आनन्दमय विज्ञानस्वरूप का यशोवर्णन कर रही है, जिस वर्णन का उपनिषच्छुति ने महता समारम्भेण इन शब्दों में उद्घोष किया है कि –

''विज्ञानाद्धयेव खल्विमानि भूतानि जायन्ते, विज्ञानेन, जातानि जीवन्ति,
विज्ञानं प्रयन्त्यभिसंविशन्ति, विज्ञानमित्युपास्व।'' – तैत्तिरीयोपनिषत्।''[13]

अर्थात् शास्त्री जी के 'विविध ज्ञानं विज्ञानम्' सिद्धान्त के अनुसार ब्रह्म विषयक ज्ञान से विश्वरूपात्मक विज्ञान उत्पन्न हुआ और इन ज्ञान–विज्ञानात्मक तथ्यों की पुष्टि स्वयमेव वैदिक वाङ्मय से हो रही है।

अतः विज्ञान के अङ्कुर वैदिक वाङ्मय में ही विद्यमान हैं तथा शास्त्री जी का विज्ञानभाष्य उन्हीं से प्रस्फुटित हुआ है।

विज्ञानभाष्य की दृष्टि से अत्यन्त महत्त्वपूर्ण दो प्रमुख शब्दों ज्ञान–विज्ञान के मध्य अन्तर को स्पष्ट करते हुए शास्त्री ही कहते हैं कि ज्ञानतत्त्व में विविधता नहीं होती है जबकि विज्ञानतत्त्व विविधता से आपूर्ण है – आधारभूत ज्ञानतत्त्व वैविध्य से पृथक् है एवं विज्ञानतत्त्व वैविध्य से समन्वित है। वस्तुतत्त्व तो वास्तव में यही है कि, एक ही तत्त्व के, दूसरे शब्दों में, एक ही विज्ञान के दो प्रमुख विभिन्न दृष्टिकोण हैं – एक ज्ञानात्मक विज्ञान एवं एक विज्ञानात्मक विज्ञान।''[14]

अस्तु–ज्ञान–विज्ञान दोनों के उद्गम का स्रोत एक ही होता है। इस एक दृष्टान्त के द्वारा इस प्रकार समझा जा सकता है कि 'यह वृक्ष है', इस 'ज्ञान' के

अनन्तर वृक्ष से सम्बन्धित शाखा, पुष्प, फलादि विषयक विविध ज्ञान 'विज्ञान' के रूप में जाना जा सकता है। अतः प्रथमतः तो एक विषय का बोध होता है तदन्तर उससे जुड़े अनेक विषयों का बोध होता है। इस प्रकार ज्ञानात्मक विज्ञान तथा विज्ञानात्मक विज्ञान में आधार–आधेय सम्बन्ध है।

5 ब्रह्मविज्ञानधारा एवं यज्ञविज्ञानधारा

शास्त्री जी ने ज्ञानात्मक विज्ञान एवं विज्ञानात्मक विज्ञान का मूल आधार 'ब्रह्म' एवं 'यज्ञ' इन प्रमुख शब्दों को माना है जो उन्हें ऋषिप्रज्ञा की शरण से सुलभ हुये हैं –

''ब्रह्मशब्दानुगत ब्रह्मविज्ञान, एवं यज्ञशब्दानुगत यज्ञविज्ञान, इन दोनों नवीन पारिभाषिक शब्दों के द्वारा अब हमें इस निष्कर्ष पर पहुँच जाना पड़ा कि सम्पूर्ण विश्व का जो प्राकृतिक स्वरूप है, वह यज्ञविज्ञानात्मक है। इस विज्ञानात्मक प्राकृतिक विश्व की जो मूल प्रतिष्ठा है, वह ब्रह्मविज्ञानात्मिका है। ब्रह्मविज्ञान को प्रतिष्ठा बनाए बिना यज्ञविज्ञान जहाँ अपने स्वतंत्र रूप से प्रवृत्युन्मुख बन जाता है, वहाँ एकाकी यज्ञविज्ञान कामासक्तिमूला लौकैषणाओं का समुत्तेजक बनता हुआ विश्वरूपसंरक्षण के स्थान में विश्वरूपविनाश का ही कारण बन जाता है।''[15]

विज्ञानभाष्य में वेदविज्ञान की परिभाषाओं का मूल आधार 'ब्रह्म' एवं 'यज्ञ' हैं।

6 ब्रह्म–यज्ञ–भूत–पा विज्ञानधारात्रयी

शास्त्री जी के अनुसार वेद शास्त्र में प्रमुख रूप से तीन पर्वों–ब्रह्म–यज्ञ–भूत का विस्तार से निरूपण किया गया है। उन्होंने इन तीनों को ही ज्ञातव्य माना है। इनके साथ विज्ञान शब्द का समन्वय करते हुए उक्त तीनों पर्वों को 'ब्रह्मविज्ञान–यज्ञविज्ञान–भूतविज्ञान' इन नामों से व्यवहृत किया है। तत्पश्चात् इन तीनों विज्ञानधाराओं का पर्यवसान क्रमशः 'अक्षरविज्ञान–क्षरविज्ञान–विश्वविज्ञान' पर हो रहा है –

International Journal of Research
Special Issue for UGC Approved Journal-Hindi Papers
Available at https://edupediapublications.org/journals
e-ISSN: 2348-6848
p-ISSN: 2348-795X
Volume 05 Issue 05
March 2018

''आत्मब्रह्म के आधार पर पूर्व में जिन दो विचारधाराओं का उपक्रम हुआ था, वस्तुगत्या उनका विश्राम इन तीन विज्ञानधाराओं पर ही हो रहा है, जो क्रमशः 'अक्षरविज्ञान–क्षरविज्ञान–विश्वविज्ञान' इन नामों से, तथा 'प्रकृतिविज्ञान–प्रकृतिविकृति–विज्ञान–विकारविज्ञान' – इन नामों से भी व्यवहृत की जा सकती है। ज्ञानैकघन आत्मदेव जहाँ 'सत्यं ज्ञानमनन्तं ब्रह्म' इस श्रुति का लक्ष्य है, वहाँ 'नित्यं विज्ञानमानन्दं ब्रह्म' इस श्रुति से त्रिधारात्मिका ब्रह्म–यज्ञ–भूत–विज्ञानत्रयी का ही संग्रह हो रहा है।

1. ब्रह्म (अक्षरविज्ञानम्–प्रकृतिविज्ञानं वा) – ब्रह्मविज्ञानधारा
2. यज्ञः (क्षरविज्ञानम्–प्रकृतिविकृतिविज्ञानं वा) – यज्ञविज्ञानधारा
3. भूतम् (विश्वज्ञानम्–विकारविज्ञानं वा) – भूतविज्ञानधारा।''[16]

उपर्युक्त विवेचन के आधार पर यह कहा जा सकता है कि शास्त्री जी ने वेदविज्ञान को ब्रह्मविज्ञान या सृष्टिविज्ञान अथवा यज्ञविज्ञान कहा है। यह वेदविज्ञान शास्त्री जी के दृष्टिकोण से 'विज्ञान' शब्द के तात्पर्य से 'विविधं ज्ञानं विज्ञानम्' से भाष्य के स्वरूप को उद्घाटित करता है। तथा क्रमशः ज्ञान के मूल उद्गम ब्रह्म तथा यज्ञ से प्रारम्भ होकर भूत पर्यन्त विकसित है।

यह विज्ञानभाष्य वेदविज्ञान की परिभाषाओं को व्यवस्थित रूप में प्रस्तुत करता है जिसका समग्र दिग्दर्शन चतुर्थ एवं पञ्चम अध्यायों में यथाशक्य किया जायेगा।

सन्दर्भ सूची

[1] शब्द कल्पद्रुम, भाग–3, पृ० 509
[2] शास्त्री, शत०ब्रा०, हिन्दी–विज्ञान भाष्य, प्रथम काण्ड (प्रथम खण्ड), आत्मनिवेदन, पृ० 126
[3] वही, पृ० 36
[4] वही, पृ० 102
[5] वही, पृ० 67
[6] वही, पृ० 40
[7] चौबे, वेद विज्ञान–चिन्तन, पृ० 52

e-ISSN: 2348-6848
p-ISSN: 2348-795X
Volume 05 Issue 05
March 2018

[8] शास्त्री, मोती लाल, भारतीय दृष्टि से 'विज्ञान' शब्द का समन्वय, पृ० 8–9
[9] वही, पृ० 5
[10] चौबे, वेद विज्ञान–चिन्तन, पृ० 5
[11] तैत्तरीय उपनिषद्, 3/5
[12] चौबे, वेद विज्ञान–चिन्तन, पृ० 43–44
[13] वही, पृ० 53–54
[14] चौबे, वेद विज्ञान–चिन्तन, पृ० 54
[15] वही, पृ० 54
[16] वही, पृ० 86–87